प्रो० नाम- डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर, [illegible] महिला कॉलेज, [illegible]
राजनीति शास्त्र विभाग
कक्षा- बी.ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट- 01, सत्र 2019-20
पेपर- 01
दिनांक- 18.07.2020

टॉपिक — मार्क्सवादी कार्यक्रम

पूंजीवाद का अंत कर उसके स्थान पर साम्यवादी समाज की स्थापना के लिये मार्क्स ने अपने कार्यक्रम में तीन चरण की चर्चा की है -

प्रथम चरण — पूंजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध क्रांति — मार्क्सवादी व्यवस्था का यह प्रथम चरण मार्क्सवादी पद्धति की धारणा से संबंधित है जिसमें पूंजीवाद का अंत कर सर्वहारा वर्ग के अधिनायकवाद की स्थापना का उल्लेख है।

द्वितीय चरण — सर्वहारा वर्ग के अधिनायकवाद की स्थापना — मार्क्स ने क्रांति के बाद अंतिम आदर्श की प्राप्ति से पूर्व एक संक्रमणकालीन अवस्था का उल्लेख किया है जिसे वह सर्वहारा अधिनायकवाद कहता है। जिसमें श्रमिक वर्ग राज्य की शक्ति पर अपना अधिकार कर लेगा और वह राजनीतिक शक्ति के बल पर पूंजीवाद के अवशेषों को नष्ट कर देगा, उत्पादन के साधनों पर समाज का स्वामित्व स्थापित करेगा और वर्ग विहीन तथा राज्यविहीन समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करेगा। सर्वहारा वर्ग के अधिनायकवाद के द्वारा कुछ निम्न प्रकार के कार्यक्रम अपनाये जायेंगे — (i) भूमि के रूप में संपत्ति की व्यवस्था का अंत किया जाना और लगान का उपयोग सार्वजनिक कार्य के लिये किया जाना (ii) आय और आयकर की मात्रा को बढ़ाना (iii) उत्तराधिकार की प्रथा को समाप्त करना (iv) बैंकों पर राज्य का एकाधिकार (v) भगोड़ों और विद्रोहियों की संपत्ति को जब्त करना (vi) संचार, डाक और यातायात के साधनों पर राज्य का अधिकार (vii) उद्योग धंधों एवं उत्पादन के साधनों का विस्तार करना (viii) कृषि योग्य भूमि का विस्तार करना (ix) शिक्षा की मुफ्त व्यवस्था करना।

तृतीय चरण — साम्यवादी समाज की स्थापना — साम्यवादी समाज की स्थापना मार्क्सवादी कार्यक्रम का तृतीय चरण है जिसके तीन लक्षण

Scanned with CamScanner

हैं – (i) सभी व्यक्तियों की पूर्ण समानता – साम्यवादी समाज में सभी व्यक्तियों की पूर्ण समानता को आधार बनाया गया है। साम्यवादी समाज में सभी व्यक्ति पूर्ण समान होंगे और मानसिक काम करने वाले व्यक्तियों का वेतन तथा जीवन और सामाजिक स्तर शारीरिक काम करने वाले व्यक्तियों के समान होगा। उस सामाजिक व्यवस्था का आधारभूत नियम 'प्रत्येक व्यक्ति से उसकी योग्यतानुसार कार्य और उस कार्य के बदले में उसे आवश्यकतानुसार प्राप्ति (Each according to his ability and each according to his needs) होगा।

(ii) वर्गविहीन और राज्यविहीन समाज – साम्यवादी व्यवस्था में जब सभी समान होंगे तो विद्यमान बिरोधी वर्ग समाप्त हो जायेंगे और उनके स्थान पर केवल एक ही वर्ग होगा – श्रमिक वर्ग जिससे कि स्वाभाविक रूप से यह समाज एक वर्गहीन समाज होगा। वर्गहीन समाज में राज्य स्वतः ही समाप्त हो जायेगा। मार्क्सवाद के अनुसार साम्यवादी अवस्था में वर्गभेद और शोषण का अंत हो जायेगा इसलिये राज्य की आवश्यकता नहीं रहेगी। सभी लोग सामाजिक जीवन के प्राथमिक नियमों का पालन करने के अभ्यस्त हो जायेंगे।

(iii) तकनीकी दृष्टि से उन्नतिशील समाज – मार्क्स का साम्यवादी समाज तकनीकी दृष्टि से उन्नतिशील समाज होगा इसमें बुर्जुआ तकनीक को तो अपनाया जायेगा किंतु बुर्जुआ प्रणाली के दोष नहीं रहेंगे।

इस प्रकार मार्क्स के अनुसार साम्यवादी समाज मानवीय जीवन की अंतिम अवस्था होगी। जिस द्वन्द्वाद के आधार पर मानवीय इतिहास में अब तक विकास होता रहा है वह द्वन्द्ववादी प्रक्रिया साम्यवादी समाज में आकर रुक जाती है।